जन्म के बाद विकलांगता का सही समय पर उपचार के माध्यम से प्रायः स्थायी समाधान हो जाता है। लेकिन कभी-कभी इसके आंशिक लक्षण दिखाई पड़ते हैं।

स्थायी समाधानों में से अनेक वृद्धावस्था अथवा प्राकृतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप अपने प्रभावों को व्यक्त करते हैं। जिससे व्यक्ति में शारीरिक अपंगता आ जाती है।

आंगिक असामान्यता के कारण शारीरिक विकलांग बालकों को सरलता से पहचाना जा सकता है। यह असामान्यता उनके व्यवहार, शारीरिक आकृति, चलना, उठना-बैठना आदि के अतिरिक्त उनकी कार्य क्षमता, कार्य-विधि, कार्य परिणाम आदि से स्पष्ट जानी जा सकती है। इनमें से अधिकांश सामान्य शिक्षण पद्धति से ही लाभान्वित हो सकते हैं। इनको केवल अतिरिक्त सहायता सामग्री व शिक्षक द्वारा अधिक ध्यान व समय देने की आवश्यकता होती है।

किसी भी बालक में विकलांगता का क्या कारण है? इस दिशा में अध्ययन की रूपरेखा बनाते समय, कारणों को मूलतः दो अंशों में बाँटा जा सकता है- एक जन्म से शारीरिक विकलांगता और दूसरे, जन्म के बाद शारीरिक विकलांगता।

शारीरिक रूप से विकलांग बालकों को उनके प्रभावित अंगों व तन्त्रों के आधार पर निम्न वर्गों में रखा जा सकता है —

1. चक्षु-विकलांग (Visually Handicapped) बालक
2. श्रवण-विकलांग (Aurally Handicapped) बालक
3. वाक्-विकलांग (Speech Handicapped) बालक
4. विरूपित (Crippled) बालक
5. शारीरिक रूप से अस्वस्थ (Unhealthy) बालक
6. प्रमस्तिष्कीय क्षति (Cerebral Palsy)
7. मिरगी (Epilepsy)
8. लकवा (Paraplegia)

(1) चक्षु विकलांग (Visually Handicapped OR Blind)

सदा से ही विकलांगता उनका जीवन समाज में दया, सहानुभूति व भिक्षा प्रवृत्ति पर आश्रित रहा है, तथापि - इतिहास ने हमको "सूरदास" जैसे प्रख्यात भक्त कवि दिए हैं, जो जन्मान्ध थे।

लुई ब्रेल जिन्होंने चक्षुहीनों को स्पर्श के माध्यम से पढ़ने हेतु सफल विधि देकर चक्षुहीनों पर बड़ा उपकार किया स्वयं वे चक्षुहीन थे। आज चक्षुहीन विभिन्न औद्योगिक प्रशिक्षण ग्रहण करने के अतिरिक्त क्रिकेट व पैराशूट द्वारा वायुयान से कूदने जैसे अद्भुत प्रदर्शन करने लगे हैं।

आयुर्विज्ञान – "आयुर्विज्ञान में चक्षुहीनता का तात्पर्य नेत्रों से कुछ भी न देख पा सकने की स्थिति है"।

शैक्षिक दृष्टि से – "चक्षुहीनता एक ऐसा दृष्टि विकार है जिसके परिणामस्वरूप दृश्य-सामग्री के प्रयोग से शिक्षण आंशिक रूप से भी सम्भव न हो सके"।

"चक्षुहीनता को चिकित्सा विज्ञान के आधार 20/200 सीमा के अतिरेक के आधार पर परिभाषित किया है अर्थात एक सामान्य व्यक्ति किसी पृष्ठभूमि में 20' तक तथा 200 फीट तक अथवा इससे कम स्पष्ट रूप से देख सकता है। सामान्य चक्षु क्षमता 20/70 से 20/200 के मध्य अच्छी मानी गयी है।"

चक्षुहीनता के प्रकार (Types of Blindness)

शैक्षिक दृष्टि से चक्षु-विकलांग बालकों को दो मुख्य वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

(1) नेत्रहीन (Blind) बालक –

इस वर्ग में वह सभी चक्षु-विकलांग बालक आते हैं जो जन्म से पूर्ण या आंशिक रूप से अन्धे होते हैं या कम उम्र में ही पूर्ण एवं आंशिक रूप से अन्धे हो जाते हैं।

ऐसे बालकों को सामान्य विद्यालयों में चक्षु-सम्पन्न बालकों के साथ दृश्य-सामग्री की सहायता से पढ़ाना किसी भी प्रकार से हितकारी नहीं होता है।

(2) आंशिक दृष्टि (Partially-visioned) बालक

वह बालक जो अपनी दृष्टि को कुछ उपचार व चश्में (Lenses) के उपयोग से अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग में ला सकते हैं, आंशिक दृष्टि बालक कहलाते हैं।

चक्षुहीनता के कारण (Causes of Blindness)

नेत्र रोग विशेषज्ञों के अनुसार विभिन्न कारणों से उत्पन्न चक्षुहीनता के उपचारोपरान्त

Scanned with CamScanner

चक्षुहीनता के सामान्य कारण लापरवाही उचित उपचार न करवाना एवं बीमारी (विशेष रूप से- चेचक आदि) में सुनिश्चित सावधानियाँ न कर सकना आदि है। धूल- धुएँ व धुआँ भी चक्षुहीनता के सामान्य कारणों में से एक है जो आंशिक अन्धता (Partial Blindness) रतौंधी (Night Blindness) एवं रंग अन्धता (Colour Blindness) को जन्म देते है। इस प्रकार की चक्षुहीनता के प्रमुख कारण निम्न है।

① संक्रामक रोग (Infectious Disease) – प्रायः 60% से 70% तक बालक संक्रामक रोगों में असावधानी के कारण चक्षुहीन अवस्था को प्राप्त होते है। रक्त का विकार भी अन्धता का कारण बन जाता है।

② दुर्घटना एवं चोट (Accident OR Injury) – सुरक्षा एवं निर्देशन के अभाव में मारपीट या दुर्घटना के कारण नेत्र में लगी घातक चोट भी चक्षुहीनता का कारण बन जाती है।

③ वंशानुगत प्रभाव (Hereditary Effect) – कभी-कभी अन्धता वंशानुगत भी होती है।

④ साधारण रोग (Common Diseases) – विभिन्न नेत्र रोगों व अन्य शारीरिक रोग भी चक्षुहीनता का कारण हो सकते है।

⑤ विष का प्रभाव (Effect of Poisons) – विष का प्रभाव भी चक्षुहीनता का एक कारण हो सकता है।